INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

धर्म एवं सामाजिक जीवन

डॉ इन्द्रजीत **डॉ प्रविण्यलता मारकण्डेय**

जहाँ मानव समाज है, वही धर्म है। ऐसा कोई भी समाज नही है, जहाँ धर्म का आस्तित्व न हो। इतना अवश्य है कि देश काल और परिस्थितियां धर्म के स्वरूप और कार्यों को प्रभावित करती है। जहाँ समाज है धर्म का आस्तित्व भी वही है । मानव की अनेक आवश्यकताएं होती है। धर्म ऐसा साधन है जो मानव आवश्यकताओं की पूर्ति में मदद करता है। हिन्दू समाज में धर्म को जीवन का अभिन्न अंग मानने का कारण यही है। इसीलिए धर्म धारण करने की प्रक्रियाओं को सम्बोधित करता है। धर्म ही वह शक्ति है जो व्यक्ति के कर्तव्यों का निर्धारण करती है। धर्म समस्त मानव क्रियाओं को समाजित किए रहताह`।

धर्म के स्त्रोत

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार "ज्ञान" धर्म की उत्पत्ति और विकास का आधार हैं। जैसे ही ज्ञान की उत्पत्ति हुई होगी ठीक उसी क्रम में उसके साथ ही धर्म का भी अंत्युदय हुआ होगा। जहाँ तक ज्ञान का सम्बन्ध है, भारतीय दर्शन के अनुसार श्रुति अथवा वेद समस्त मानव ज्ञान के आधार हैं वेद मात्र हिन्दूओं को ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के आदि ग्रंन्थ हैं। इसके बाद श्रुति के आधार पर मनीषियों के कुछ व्यवस्थाएं दी। भारतीय सामाजिक में धर्म के प्रमुख श्रोंतों को निम्नलिखत चार भाग है।

(1) वेद – वेदों को श्रुतियों के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। वेदों में ऋचाएं प्रकाश पुंज या ज्ञान के आधार स्तम्भ है। वेदों के रचियता ऋषियों ने इसलिए उद्घोष किया था कि तमसों मां ज्योतिगमयं ।वेदों का आधार मानव जाति का कल्याण है और इसी दृष्टि से वेदों में व्याख्याएं की गई है। ये व्याख्याएं वैज्ञानिक और हृदयस्पर्शी हैं । वेदों में मुख्य रूप से निम्न तत्वों पर प्रकाश डाला गया है–

(1) जीवन और जीव–जगत की उत्पत्ति

(2) मानव जीवन की चरम गति

(3) कर्मकाण्ड

(2) स्मृति – धर्म की उत्पत्ति की दृष्टि से स्मृतियों का वेदों के बाद दूसरा स्थान है। वेदों में यद्दपि धर्म की ओर संकेत है, किन्तु इसका व्यवस्थित वर्णन उनमें नहीं है। स्मृतियां मानव आचरणों और व्यवहारों को सुव्यवस्थित करती है तथा उसे नियमबद्धता की आरे ले जाती है। सामान्यतया स्मृतियों में श्रुतियों का ही अनुसरण किया गया है। इसीलिए मानव व्यवहार के लिए इन्हें प्रमाण माना जाता है।

(3) धर्मवेत्ता – धर्मात्मा लोगों के आचरण को भी धर्म की उत्पत्ति का आधार माना जाता हैं । वे आदर्श पुरूष जो वेदों को जानते थे तथा वेदों के अनुरूप आचरण करते थे, समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए पथ–प्रदर्शन का कार्य करते थे। महाभारत मे महाराज यज्ञ ने धर्मराज युधिष्ठिर से पूछा था कि धर्म क्या है। युधिष्ठिर ने उत्तर दिया था कि महाराज जिस मार्ग से गए है, ही सच्चा धर्म हैं।

(4) व्यक्तिगत अन्तःकरण – धर्म की उत्पत्ति का चौथा और अंतिम स्त्रोत है। व्यक्ति का अपना अन्तःकरण। जिस कार्य को व्यक्ति का अन्तःकरण स्वीकार नहीं करता, उस कार्य को नहीं करना चाहिए। मनोस्मृति के अनुसार धर्म उन कार्यो को सम्पादित करना चाहिए, जिससे अन्तरात्मा प्रसन्न हो।

समाजिक जीवन

समाजिक जीवन में धर्म के महत्व का प्रश्न एक विवादपूर्ण विषय बना हुआ है। फ्रायड ने धर्म को न केवल एक भ्रमजाल और पागलपन कह दिया है। बल्कि आपके अनुसार नैतिकता एक बाहर से लादी गयी वस्तु है जो मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति को अवरूद्ध करके उसमें अनेक मानसिक रोगी को उत्पन्न करती है। अपनी एक पुस्तक "डिसकन्सेन्ट ऑफ सिविलाईजेशन" मे फ्रॉयड का कथन है कि समाज में यदि नैतिकता के बन्धन न हो तो मनुष्य पुनः बर्बरता के स्तर में पहुंच जाए। जो हिन्दू धर्म से परिचित नहीं हैं

हिन्दू धर्म के उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे समाज में धर्म का संबंध केवल विश्वास से नहीं बल्कि यह उस उपयोगी और व्यावहारिक संस्था है। इसके द्वारा उन जिज्ञासाओं का सफलतापूर्वक समाधान किया गया है, जिनको उच्च से उच्च वैज्ञानिक ज्ञान के द्वारा भी नहीं समझा जा सकता। प्रस्तुत विवेचन में यह ध्यान अवश्य रखना होगा कि धर्म से हमारा तात्पर्य मौलिक हिन्दू धर्म से है। उन कर्मकाण्डों, पुराण, कथाओं और स्मृतिकालीन व्यवस्थाओं से नहीं । जिन्होनें धर्म के नाम पर सम्पूर्ण समाज के विषाक्त कर दिया। इस आधार पर निम्नांकित क्षेत्रों में धर्म के समाजशास्त्री महत्व को स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) व्यक्ति के विकास का आधार– व्यक्तिगत जीवन को संगठित रखने में भी धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म प्रत्येक स्थिति में व्यक्ति को प्रसन्न रखने और प्रत्येक स्थिति में प्रेरणा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण आधार हैं । भौतिक साधनों की सहायता से उद्देश्य को प्राप्त न कर सकने से व्यक्ति में निराशा और आत्महीनता के दोष उत्पन्न हो जाते हैं लेकिन धर्म ही एक ऐसा आधार है जो असफलता की स्थिति में भी ईश्वरीय इच्छा का विश्वास दिलाकर व्यक्ति की पुनः दुगुने उत्साह से अपना कार्य करने की प्रेरणा देता हैं । धर्म व्यक्ति के जीवन के महत्व को स्पष्ट करके पवित्र भावनाओं का विकास करके तथा मानसिक चिन्तन से छुटकारा दिलाकर व्यक्तित्व का विकास करने में सबसे अधिक सहायक है।

(2) सामाजिक संगठन में सहायक – सामाजिक संगठन की धारणा स्थिति और भूमिका के संतुलन तथा सामाजिक संबंधों के समुचित विकास से संबंधित है। हिन्दू धर्म ने प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्यों का निर्धारण करके उन्हें एक विशेष सामाजिक स्थिति प्रदान करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। इसके फलस्वरूप हमारे समाज में अधिकारों के लिए होने वाले संघर्षों की मात्रा सदैव न्यूनतम नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने सवधर्म की सीमाओं के अन्दर रहकर ही कर्तव्यों को पूरा करने का प्रयत्न करता है। धर्म ने पाप, पुण्य , मोक्ष ओर कर्म की धारणा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को एक नैतिक जीवन व्यतीत करने को प्रोत्साहन दिया है। इससे न केवल स्वस्थ सामाजिक संबंधों का विकास होता है, बल्कि परिवार भी एक संगठित इकाई के रूप में कार्य करने लगता हैं

(3) धर्म संस्कृति की रक्षा का आधार – यद्यपि सभी समाजों में संस्कृति की रक्षा करने में धर्म का योगदान महत्वपूर्ण रहता हैं। लेकिन हिन्दू धर्म ने अपने व्यावाहरिक और उपयोगी स्वरूप के कारण हमारी संस्कृति को हजारो वर्षों से स्थायी बनाए रखा। संसार में कितनी संस्कृतियां और सभ्यताएं समय–समय पर विकसित हुई

और समाप्त हो गयी। लेकिन सम्पूर्ण मानव इतिहास में वैदिक संस्कृति के समान कोई भी संस्कृति दृढ़ न रह सकी। उदाहरण के लिए सुमेर बेबिलोनिया, मिश्र रोम और हिन्दू सम्यताएं आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले ही समाप्त हो गई। चीन की सभ्यता मेक्सिन ओर मायग सभ्यता की अपने–अपने क्षेत्र में कितनी स्थायी नहीं रह सकी, लेकिन वैदिक सभ्यता ही संसार की एकमात्र ऐसी सभ्यता है जो ईसा के 3000 वर्ष सें पहले लेकर आज तक अपनी स्थिरता को बनाए हुए हैं। इसका एकमात्र कारण हिन्दू धर्म का वह व्यावहारिक स्वरूप है जो सम्पूर्ण मानवता को अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा देता हैं ।

(4) धर्म सामान्य कल्याण में सहायक – धर्म व्यक्तिवादिता को प्रोत्साहन न देकर सामान्य कल्याण में वृद्धि करने का प्रयत्न करता हैं । भारतीय सामाजिक जीवन में आज बन्धुत्व, मित्रता, पारस्परिक सहायता और त्याग के जो गुण विद्यमान है उनका मूल कारण हिन्दू धर्म की उदारता ही है। हिन्दू धर्म के प्रत्येक व्यक्ति को आत्म–कल्याण और त्याग की प्ररेणा देकर उसमें सामान्य कल्याण की भावना को विकसित किया हैं। भौतिकता के वर्तमान युग में यदि किसी समाज में आज निःस्वार्थ सेवा और सद्भाव के गुण है तो वह भारतीय समाज ही है। हिन्दू धर्म ने सांसारिक सुखो और विषयों के प्रति सबसे अधिक विषक्ति उत्पन्न करके प्रत्येक व्यक्ति को एक ही स्तर पर लाकर खड़े कर दिया है। जिसके कारण हमारे समाज में प्राथमिक संबंधो के द्वारा सामान्य कल्याण को सबसे अधिक प्रोत्साहन मिल सका।

(5) धर्म अनौपचारिक नियंत्रण का सर्वोत्तम साधन – व्यक्ति के व्यवहारों को नियंत्रण करने तथा सामाजिक व्यवस्था के प्रति व्यक्तियों में निष्ठा उत्पन्न करने के क्षेत्र में भी धर्म ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कानून और न्यायालय नियंत्रण के औपचारिक साधन है। जिनकी अवहेलना करना व्यक्ति की आदत बन जाती है लेकिन धार्मिक नियमों के पीछे ईश्वरीय दण्ड का भय होने के कारण व्यक्ति इनकी अवेहलना नहीं करता। अलौकिक शक्ति प्रत्येक स्थान पर विद्यमान रहती हैं, इस विश्वास में व्यक्तियों की प्रत्येक स्थिति मे दुराचरण करने से रोका है और इस प्रकार उन्हें आत्म नियंत्रण की ओर प्रेरित किया है। सच तो यह है कि समाजिक नियंत्रण का सर्वप्रमुख आधार व्यक्तियों में भावात्मक एकता का होता है। भावात्मक एकता से संघर्षो में कमी होती है साथ ही व्यक्ति अपनी समाजिक स्थिति को न्यायपूर्ण समझकर सामाजिक व्यवस्था का विरोध करने का प्रयत्न नहीं करता। इस प्रकार हिन्दू धर्म ने भावात्मक एकता को प्रोत्साहन देकर समाज में सदैव एक ही आदर्श नियंत्रण की स्थापना की है।

(6) धर्म कर्म का वास्तविक स्त्रोत – हिन्दू धर्म एक विश्वास नहीं है, बल्कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को पालन करने का निर्देश देने वाली एक महत्वपूर्ण विधि है। हमारे धर्म ने प्रत्येक को दूसरे व्यक्तियो के प्रति तथा अपने देशकाल और परिस्थितयों के अनुसा अपने दायित्वों का निर्वाह करने का प्रोत्साहन दिया हैं। गीता में जिस निष्काम कर्म का आदेश दिया गया है उसका संबंध वैराग्य अथवा अपने दयित्वों के प्रति उदासीन हो जाने से नहीं है, बल्कि अपने दायित्व को पूर्ण करने के बाद भी उसके परिणाम के प्रति तटस्थ रहने से है।

निष्कर्ष – धर्म का सामाजिक जीवन व हिन्दू समाज में विशेष महत्व है जो हिन्दू सामाजिक जीवन को नियंत्रित करती है। जीवन को सुख–दुख, पवित्र–अपवित्र को समझनें में सहायक है। भारतीय सामाजिक जीवन में धर्म, गीता, पुराण, महाभारत का अमूल्य योगदान हैं

संदर्भग्रंथ सूची –

(1) डॉ. एम.एम.लवानिया 'धर्म का समाजशास्त्र' रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर–2, 1989

(2) डॉ. डी.एस.बघेल 'भारतीय समाज कौशल पुस्तक सदन, भोपाल 2007

(3) रवीन्द्रनाथ मुखर्जी 'भारत में सामाजिक परिवर्तन' विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली, 2003

(4) डॉ. जी.के.अग्रवाल 'सामाज शास्त्र का परिचय' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2019

(5) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय धर्म का अध्ययन दिल्ली, 1992

(6) ई–टाइलर प्रिमिटिव कल्चर मरे लंदन, 1871

(7) बैटी आर,शार्फ दि सोशियोलोजिकल स्टडी ऑफ रिलिजन लंदन, 1970

(8) दुबे श्यामाचरण 'मानव और संस्कृति' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1960

(9) द्विवेदी रमेशनंदन 'उच्च्तर समाज शास्त्रतीय सिद्धांत' विजय प्रकाशन वाराणसी, 1988

(10) जैन दशरथ 'समाज व संस्कृति' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1985

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM